हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन परंपरा

डॉ. नवीन नन्दवाना

हिन्दी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

www.fppt.info

हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन परंपरा

- हिंदी में साहित्य का इतिहास लेखन की परम्परा की विधिवत शुरुआत 19 वीं शताब्दी से ही मानी जाती है। कुछ पूर्ववर्ती रचनाएं मिलती हैं जो कालक्रम व विषय-वस्तु का विवेचन न होने के कारण इतिहास ग्रन्थ तो नहीं लेकिन उनमें रचनाकारों का विवरण है।

www.fppt.info

वृत्त संग्रह कहा जा सकता है-

- इन्हें वृत्त संग्रह कहा जा सकता है। इनमें प्रमुख है –
- 1. चौरासी वैष्णव की वार्ता (गोकुलनाथ)
- 2. दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता
- 3. भक्त नामावली (ध्रुवदास)
- 4. भक्तमाल (नाभादास)
- 5. कालिदास हजारा (कालिदास त्रिवेदी)

www.fppt.info

गार्सा द तासी (फ्रेंच में)

- **गार्सा द तासी (फ्रेंच में)**
- ये पेरिस विश्वविद्यालय में उर्दू के प्राध्यापक थे।
- उर्दू पर विशेष ध्यान था तथा फ्रेंच और उर्दू विद्वान थे।
- हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास लेखक के रूप में ख्यात हैं।
- ग्रंथ का नाम- एस्त्वार द ला एन्दुई एन्दुस्तानी

www.fppt.info

- यह फ्रेंच भाषा में लिखा गया हिन्दी का प्रथम इतिहास गंथ है जिसका प्रकाशन – ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड की ओरियन्टल ट्रांसलेशन सोसायटी ने कराया।
- दो भाग में प्रकाशित है। प्रथम भाग 1939 और दूसरा भाग 1947 में प्रकाशित हुआ। इसका पुनर्प्रकाशन 1973 हुआ।

www.fppt.info

- इस ग्रंथ में 738 हिन्दी-उर्दू कविओं का अंग्रेजी वर्णानुसार वर्णन इया गया है जिसमें से 72 हिन्दी के कवि हैं शेष बाक़ी उर्दू के हैं।

- इस ग्रंथ का महत्त्व स बात में है कि इस दिशा में पहली बार किसी विद्वान ने प्रयास किया।

www.fppt.info

आकलन

- ✓ यह हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन का प्रथम महत्वपूर्ण प्रयास है।
- ✓ इसका अनुवाद लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने हिन्दुई साहित्य का इतिहास (1952) नाम से किया।
- ✓ इस ग्रंथ में काल विभाजन और नामकरण का कोई प्रयास नहीं है।

www.fppt.info

धन्यवाद !

www.fppt.info